हज़रत मौलाना मुहम्मद रिज़वान क़ासमी

मौलाना मुहम्मद रिज़वान क़ासमी जुलाई सन् 1944 ई0 को ज़िला दरभंगा बिहार में पैदा हुए और अक्टूबर सन् 2004 ई0 को देहान्त हुआ।

प्राथमिक शिक्षा जामिया रहमानी मुंगेर, मदरसा ढ़ाका पूर्वी चम्पारण और मदरसा हुसैनिया रांची में हासिल की। उच्च शिक्षा दारुल उलूम देवबन्द में प्राप्त की। आपने दारुल दलूम देवबन्द ही से पवित्र कुरआन का ज्ञान भी प्राप्त किया।

सन् 1969 ई0 में हज़रत क़ारी मुहम्मद तैय्यब के परामर्श से हैदराबाद तशरीफ लाये और मस्जिद आमरह में इमाम व उपदेशक की हैसियत से बहाल हुए।

सन् 1972 ई0 में दारुल उलूम सबीलुस्सलाम की नीवं रखी और कुछ वर्षों में अपनी मेहनत व लगन और संघर्ष से संस्था को शिखर की ऊँचाई तक पहुँचा दिया।

रचनाएं:

मौलाना धर्मगुरू उपदेशक और शिक्षक के साथ साथ अच्छे लेखक भी थे। रचनाओं की भाषा साहित्यक स्तर की उच्चकोटि की थी खुमार आपके पसन्दीदा शायरों में से थे, कुछ रचनाए निम्न लिखित हैं:

- चराग़े राह
- दीनी मदारिस और अस्रे हाज़िर
- ज़कात और सदक़ा फ़ितरा
- असरारे हयात
- मताए इल्म
- गंजहाये गिरामाया

एकेडमी से सम्बन्ध:

मौलाना रिज़वान क़ासमी हज़रत क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम क़ासमी के प्रिय थे। इसलिए एकेडमी की स्थापना से ही आपका सम्बन्ध इस संस्था से रहा और आप स्थाई सदस्य के रूप से रहे।

हज़रत क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम क़ासमी रह0 की मृत्यु के बाद जब नई समिति का गठन किया गया तो आप को सर्वसम्मति से उपाध्यक्ष नियुक्त हुए जो आजीवन तक रहे।

☆☆☆